

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
प्रस्तावना	
1. भाषा और विभाषा	1
नाट्यशास्त्र में भाषा और विभाषा	3
2. मागधी प्राकृत की विभाषाएँ	4
शाकारी	
1. शाकारी के प्राचीनतम उल्लेख	5
2. शाकारी के लक्षण	5
3. शाकारी विभाषा प्रयुक्त संस्कृत-नाटक	6-11
1. चारुदत्तम्	6
2. मृच्छकटिकम्	8
4. शकार का चरित्र-चित्रण	11
5. चारुदत्तम् में शाकारी का वैशिष्ट्य	17-24
मागधी प्राकृत की जातीय विभाषाएँ	23-30
1. आभीरी: मागधी की एक विभाषा	23
2. आभीरी का जातीय आधार	23
3. व्याकरण-ग्रन्थों में आभीरी	23
4. आभीरी के व्याकरणिक लक्षण	23
5. आभीरी के अन्य लक्षण	24
आभीरी प्रयुक्त ग्रन्थ	24-27
1. बालचरितम्	24
2. पञ्चरात्रम्	26
आभीरी-भाषी-पात्र	27-30
1. नन्दगोप	27
2. वृद्धगोपालक	28
3. दामक	29
4. गोपालक	29
5. गोमित्रक	29
6. गोपकन्याएँ	29
7. गोप बालक-बालिकाएँ	30

चाण्डाली-	30-37
1. चाण्डाली प्राकृत का जातीय आधार	30
2. चाण्डाली : मागधी की एक विभाषा	31
3. व्याकरण-ग्रन्थों में चाण्डाली-	31
4. चाण्डाली की सामान्य विशेषताएँ	31
चाण्डाली प्रयुक्त ग्रन्थ-	32-35
1. सत्यहरिश्चन्द्रम्	32
2. हास्यार्णव-प्रहसनम्	34
चाण्डाली भाषी पात्र-	35-37
1. प्रथम चाण्डाल	35
2. द्वितीय चाण्डाल	36
3. निषाद	37
4. साधुहिंसक	37
शाबरी	37-39
1. शाबरी का जातीय आधार	37
2. शाबरी : मागधी की एक विभाषा	38
3. व्याकरण-ग्रन्थों में शाबरी	38
4. शाबरी की सामान्य विशेषताएँ	38
5. शाबरी प्रयुक्त ग्रन्थ	39-43
1. प्रबुद्धरौहिणेयम् -	39
2. चैतन्यचन्द्रोदयनाटकम्	41
शाबरी-भाषी पात्र-	43-45
1. शबर	43
2. कर्कटाक्ष	44
3. पुरुष	44
4. श्वपाक	44
5. प्रथम भृत्य	44
6. अन्य भृत्य	44
वानौकसी प्राकृत	45-49
1. वानौकसी : मागधी की एक विभाषा	45
2. वानौकसी का जातीय आधार	45
3. व्याकरण-ग्रन्थों में वानौकसी	45
4. वानौकसी के लक्षण	45

मागधी प्राकृत की विभाषाएँ

वानौकसी प्रयुक्त ग्रन्थ	45-48
1. अञ्जना-पवनञ्जयम्	45
2. निर्भयभीमव्यायोगः	47
वानौकसी-भाषी पात्र-	48-49
1. चमूरक	48
2. लवलिका	48
3. सूकरमुख	48
4. व्याघ्रमुख	49
मान्दुरिका प्राकृत	49-50
1. मल्लिकामारुतम्	49
2. लक्षण एवं संदर्भ	50
द्राविड़ी प्राकृत	50-51
मागधी प्राकृत की क्षेत्र-विशेष विभाषाएँ	
1. ढक्की या टक्की	51
1. ढक्क और टक्क की भौगोलिक स्थिति	52-53
2. ढक्क	52
3. टक्क	52
4. ढक्की और टक्की के सामान्य लक्षण	53
टक्की	53
5. ढक्की/टक्की के उपलब्ध सन्दर्भ	54
ढक्की/टक्की भाषी पात्र	54-56
1. माथुर	54
2. घृतकर	55
मृच्छकटिकम् के ढक्की/टक्की-सन्दर्भ की समीक्षा	56
2. बाह्लीकी	58-65
1. बाह्लीकी : मागधी की एक विभाषा	58
2. बाह्लीकी की भौगोलिक स्थिति	58
3. व्याकरण-ग्रन्थों में बाह्लीकी	58
4. बाह्लीकी के लक्षण	58
5. बाह्लीकी प्रयुक्त ग्रन्थ	59-64
1. प्रबोधचन्द्रोदयम् -	59
2. मैथिलीकल्याणम्	61
3. धर्माभ्युदयम्	63

शाबरी-भाषी पात्र-	64-65
1. चार्वाक का शिष्य	64
2. राजसी श्रद्धा	64
3. वामन	64
4. कुब्ज	65
3. औत्कली	65-71
1. औत्कली का भौगोलिक आधार	65
2. औत्कली : मागधी की एक विभाषा	66
3. व्याकरण ग्रन्थों में औत्कली	66
4. औत्कली के सामान्य लक्षण	66
औत्कली प्रयुक्त ग्रन्थ	67-69
1. चण्डकौशिकम्	67
2. लटकमेलकम्	68
औत्कली भाषी पात्र	69-71
1. पापपुरुष	70
2. उत्कलवासी पुरुष	70
3. दिगम्बर	70
4. क्षपणक	70
5. जटासुर	71
4. औड्री	72-75
1. औड्री : मागधी की एक विभाषा	72
2. औड्री की भौगोलिक स्थिति	72
3. व्याकरण ग्रन्थों में औड्री	72
4. औड्री के लक्षण	72
5. औड्री प्रयुक्त ग्रन्थ	73
कंसवधम्	73
औड्री भाषी पात्र	74
1. कुब्जक	74
2. रजक	74
5. दाक्षिणात्या	75-77
1. दाक्षिणात्या : मागधी की एक विभाषा	75
2. दाक्षिणात्या की भौगोलिक स्थिति	75
3. व्याकरण ग्रन्थों में दाक्षिणात्या	76
4. दाक्षिणात्या की विशेषताएँ	76
4. दाक्षिणात्या प्रयुक्त रचना	76

मागधी प्राकृत की विभाषाएँ

दाक्षिणात्या भाषी पात्र	76-77
1. चाणूर	77
2. मुष्टिक	77
6. मागधी प्राकृत की विलुप्त विभाषा : आन्ध्रजा/आन्धी	77-78

भाग-1

मागधी प्राकृत की व्यक्ति-विशेष विभाषा : शाकारी

प्रथम अध्याय - व्याकरण ग्रन्थों में शाकारी	1-7
1. प्राकृतानुशासनम्	1
2. प्राकृतसर्वस्वम्	2-4
3. प्राकृतकल्पतरुः	5-7
द्वितीय अध्याय- संस्कृत नाटकों में शाकारी के संदर्भ	8-
1. शआलचलिदं (शकार-चरित्र)	8
2. बलकालाणुणए (बलपूर्वक किया जाने वाला अनुनय)	16
3. शआले शमणए अ (शकार और बौद्धभिक्षु)	32
4. लट्ठिअशालशंठाणाह शूलत्तणं (राजा के साले संस्थान की शूरता)	37
5. ववहालमण्डवे शआले (न्यायालय में शकार)	63
6. शलणागदे शआले (शरणागत शकार)	74
परिशिष्ट- शाकारी शब्दानुक्रमणिका	82-118

भाग - 2

मागधी प्राकृत की जातीय विभाषाएँ

1. आभीरी

प्रथम अध्याय : आभीरी-व्याकरण	119-120
प्राकृतसर्वस्वम्	119
प्राकृतकल्पतरुः	119
द्वितीय अध्याय : आभीरी के संदर्भ-	121-
1. घोषष्य पदी (घोष का स्वामी)	121
2. दामोदलष्य लीला (दामोदर की लीला)	129
3. हल्लीषअं पकीलां (हल्लीसक नृत्य)	133
4. कालिओ णाम महाणाअष्यमहणं (कालिय नामक महानाग का मर्दन)	136
5. गोवदालआ दालिआ अ (गोप बालक और बालिकायें)	138
परिशिष्ट- आभीरी प्राकृत शब्दानुक्रमणिका	142-157

2. चाण्डाली

प्रथम अध्याय : चाण्डाली-व्याकरण	158-160
1. प्राकृतानुशासनम्	158
2. प्राकृतसर्वस्वम्	158
3. प्राकृतकल्पतरुः	160
द्वितीय अध्याय : चाण्डाली के संदर्भ-	162-179
1. शूलालोवेषु णिउणे (शूली पर चढ़ाने में दक्ष)	162
2. एगो भाउ तुह (एको भागस्तव = एक भाग तुम्हारा)	177
3. हास्सोप्पादअ (हास्य उत्पन्न करने वाला)	178
परिशिष्ट- आभीरी प्राकृत शब्दानुक्रमणिका	180-194

3. शाबरी

प्रथम अध्याय : व्याकरण ग्रन्थों में शाबरी-	195-198
1. संक्षिप्तसारे प्राकृताध्यायः	195
2. प्राकृतानुशासनम्	195
3. प्राकृतसर्वस्वम्	196
4. प्राकृतकल्पतरुः	197
द्वितीय अध्याय : शाबरी के संदर्भ-	199-212
1. धूते सबरे (धूर्त शबर)	199
2. अवहलणं (अपहरण)	201
3. तक्कलदंडं (चोर का दण्ड)	208
4. मोहणमंतं (सम्मोहन मन्त्र)	211
परिशिष्ट- शाबरी प्राकृत शब्दानुक्रमणिका	213-224

4. वानौकसी

प्रथम अध्याय : व्याकरण ग्रन्थों में वानौकसी-	225
वानौकसी के लक्षण	225
द्वितीय अध्याय : वानौकसी के संदर्भ-	226-230
1. वणवाशशोक्खं (वनवास का सुख)	226
2. कक्कसलीले (कठोर शरीर)	227
परिशिष्ट- वानौकसी प्राकृत शब्दानुक्रमणिका	231-234

5. मान्दुरिका

मान्दुरिका का संदर्भ-	235-236
हत्थिअलोहा (दो महावत)	235
6. विलुप्त विभाषा : द्रविड़ी-	
लक्षण एवं संदर्भ	237

भाग - 3

मागधी प्राकृत की क्षेत्रीय विभाषाएँ

1. ढक्की / टक्की

प्रथम अध्याय-व्याकरण	238-241
1. प्राकृतानुशासनम्	238
2. प्राकृतसर्वस्वम्	239
3. प्राकृतकल्पतरुः	241
द्वितीय अध्याय-सन्दर्भ	242-254
जूदियर मण्डली (जुआरियों की मण्डली)	242
परिशिष्ट- ढक्की / टक्की शब्दानुक्रमणिका	255-262

2. बाह्लीकी

प्रथम अध्याय-व्याकरण	263-266
1. प्राकृतानुशासनम्	263
2. प्राकृतसर्वस्वम्	264
3. प्राकृतकल्पतरुः	265
द्वितीय अध्याय-सन्दर्भ	267-274
1. पलमत्थो (परमार्थ)	267
2. हासे-परिहासे (हँसी- मजाक)	268
3. कऊहले (कुतुहल)	273
परिशिष्ट- बाह्लीकी शब्दानुक्रमणिका	275-286

3. औत्कली

प्रथम अध्याय-औत्कली के सामान्य लक्षण	287
द्वितीय अध्याय-सन्दर्भ	288-302
1. पावपुलिसे (पापपुरुष)	288
2. उक्कलदेसस्स पुलिसो (उत्कल देश का पुरुष)	289
3. महामोह पलवदिदो दि अंबलो (महामोह प्रवर्तित दिगम्बर)	291
4. धिक्खुओ, खवणओ, कावालिओ अ (धिक्षु, क्षपणक और कपालिक)	291
5. विवाहसद्धालुओ (विवाह की इच्छा वाला)	299
परिशिष्ट- औत्कली शब्दानुक्रमणिका	303-315

4. औड़ी

प्रथम अध्याय-व्याकरण	316
द्वितीय अध्याय-सन्दर्भ	317-320
कुज्जओ-लजओ (कुब्जक-रजक)	317
परिशिष्ट- औड़ी शब्दानुक्रमणिका	321-325

5. दाक्षिणात्या

प्रथम अध्याय-व्याकरण ग्रन्थों में दाक्षिणात्या	325
दाक्षिणात्या की विशेषताएँ	326
द्वितीय अध्याय- सन्दर्भ	327-328
मल्लजुद्धं (मल्लयुद्ध)	327
परिशिष्ट- दाक्षिणात्या शब्दानुक्रमणिका	329-330

6. आन्ध्रजा / आन्ध्री

आन्ध्रजा	331
सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची	332-334
